मिशन डाइवर्सिटी

2022

एच.एल. दुसाध

मिशन डाइवर्सिटी
2022

एच. एल. दुसाध

डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट
लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2023
द्वितीय संस्करण : 2024

प्रकाशक : **डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191

© **डाइवर्सिटी ट्रस्ट**

मूल्य : 1250/- रुपये

रचना	:	**मिशन डाइवर्सिटी-2022**
लेखक	:	एच.एल. दुसाध
आवरण	:	कम्प्यूटेक सिस्टम
शब्दांकन एवं मुद्रण	:	क्विक ऑफसेट, दिल्ली-94

समर्पण

चिकित्सा जगत की विरल शख्सियत
डॉ. उदय प्रताप 'आजाद' *सर*
को सादर, जिन्होंने यू.पी. के देवरिया जनपद में
बहुजन मूव्हमेंट को आगे बढ़ाने में
अविस्मरणीय योगदान दिया है

अनुक्रम

लेखकीय *(xi)*

अध्याय-1 : 2022 का डाइवर्सिटी चिन्तन 1

विधानसभा चुनाव 2022 : कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट!—3, कैसे पूरा हो फुले दम्पति का सपना!—7, क्या विपक्ष सापेक्षिक वंचना के सद्व्यवहार का मन बनाएगा!—13, शिखर को छूती सापेक्षिक वंचना के सद्व्यवहार में व्यर्थ : विपक्ष—16, हिंदुत्ववादी शिक्षानीति की काट के लिए : एजुकेशन डाइवर्सिटी बने विपक्ष का मुद्दा!—20, कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट!—25, हिन्दू राष्ट्र के मंसूबों पर पानी फेरने के लिए : एजुकेशन डाइवर्सिटी बने विपक्ष का मुद्दा!—28, स्वामी प्रसाद मौर्य के इस्तीफे के मायने—32, लोकतंत्र को जिन्दा रखना है तो लागू करनी होगीः शक्ति के समस्त स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता!—35, हिंदुत्व के अर्थशास्त्र की रक्षा से जुड़ा है : वेलेंटाइन डे का विरोध!—39, शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का प्रतिबिम्बन बने चुनावी मुद्दा!—43, महिलाओं को आर्थिक रूप से पुरुषों के बराबर आने में लगेंगे 257 साल!—46, विकास नहीं, भागीदारी को मिले तरजीह!—50, समानुपातिक भागीदारी से भारत बन—54, सकता हैः दक्षिण अफ्रिका!—54, 5 राज्यों के चुनाव के आइने में 73वें गणतंत्र दिवस पर संकल्प!—56, मुश्किल है जय भीम का ऑस्कर में इतिहास रचना!—60, क्या ऑस्कर में इतिहास रच पायेगी : जय भीम!—65, विनिवेश में प्राथमिकता मिले गैर-हिंदू उद्यमियों को!—68, समानुपातिक भागीदारी पर सपा केन्द्रित करे अपना घोषणापत्र!—75, सामाजिक अन्यायमुक्त भारत निर्माण का—80, सपना देने में व्यर्थ : अखिलेश यादव!—80, दक्षिण भारतीय फिल्मों में बढ़ती विविधता और ऑस्कर का सपना!—84, शिवाजी के राज्याभिषेक की कीमत चुकाया : शुद्रातिशूद्र समाज!—92, क्या भाजपा के शक्ति के स्रोतों से अनजान हैं : अखिलेश और उनके सलाहकार!—96, क्या सलोन की जनता देश को नयी राह दिखाएगी!—99, कांग्रेस ने फिर खुद को साबित किया : बहुजनों का वर्ग-मित्र!—103, गुलामी से मुक्ति नहीं बना चुनावी मुद्दा!—106, बहुजनों के वर्ग शत्रु : यादव या कोई और!—110, साधु-संतः हिन्दुओं का सबसे बड़ा बहुजन

विरोधी तबका!—122, खांटी भाजपा विरोधी के रूप में उतीर्ण होने में व्यर्थः यूपी के गैर-भाजपाई दल!—126, मान्यवर कांशीराम की बसपा के पुनरुद्धार के तीन उपाय!—131, रिस्ट एश्योर्ड : क्रिकेट के भगवान की आत्मकथा!—138, बसपा के पुनरुद्धार के तीन उपाय!—144, हॉलीवुड में महिला शक्ति की नयी प्रतीक : जेन कम्पियन—148, लैंगिक असमानता तथा आर्थिक और सामाजिक विषमता से पार पाने का : एक अभिनव विचार!—152, जरूरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढना!—160, अवसरों और संसाधनों पर पहला हक़ हो देश की आधी आबादी का!—166, 2022 : सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है!—174, बाकी है अभी : सामाजिक न्याय की निर्दिष्ट परिभाषा!—187, गुलामी के प्रतीकों की मुक्ति का आन्दोलन!—192, प्रोफ़ेसर रतनलाल की रिहाई : यह आंबेडकरवाद और एकजुट लड़ाई की जीत है!—197, बहुजन बुद्धिजीवी महाराष्ट्र के दलित लेखकों से प्रेरणा लें!—201, मोदी : वर्ग संघर्ष के अप्रतिम नायक!—205, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सही काट : एजुकेशन डाइवर्सिटी—209, प्लासी युद्ध : बहुजन मुक्ति का प्रथम संग्राम!—214, विज्ञापन निधि में डाइवर्सिटी के बिना : मुमकिन नहीं है बहुजन मीडिया का खड़ा होना!—217, आजादी के 75 वर्षो बाद भी अपरकास्ट का वर्चस्व क्यों नहीं टूटा?—222, किनके लिए है आजादी का अमृत महोत्सव!—227, मोदी के मुकाबले के लिए : बने यूनिवर्सल रिजर्वेशन फ्रंट!—233, आज मेरे लेखन का रजत जयंती वर्ष है!—241, मनुवाद पर चौतरफे प्रहार का सही समय—246, सामाजिक विवेक से शून्य : हिंदुओं का प्रभु वर्ग!—250, ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 के आइनें में असमानता ख़त्म करने का एक अभिनव विचार!—255, सवर्ण आरक्षण पर आए फैसले के पीछे है : वर्ग संघर्ष में क्रियाशील सोच!—261, किसने कहा था : आरक्षण गरीबी उन्मूलन का कार्यक्रम नहीं है!—265, दुनिया के सबसे बड़े अपात्र बने : आरक्षण के पात्र!—269, संविधान बचाने का सर्वोत्तम उपाय!—273, उत्तर आधुनिक भारतीय नॉन-फिक्शन साहित्य का सबसे बड़ा लेखक कौन!—277, बाबा साहेब के दिए अधिकारों को बचाने के लिए : लड़नी होगी स्वाधीनता संग्राम जैसी लड़ाई!—280

अध्याय-2 : 2022 में फेसबुक पर दुसाध **285**

क्या सरकार की कोई मुआवजा नीति भी है!—287, हिंदुत्ववादियों को दुसाध की ओर से नववर्ष का पहला चैलेंज!—287 subrto chatterji सर को इस अद्भुत पोस्ट के लिए कोटि 2 भीम सलाम!—288, हिंदुओं के शिराओं में दौड़ते डर से सावधान!—290, बेहतरीन संपादन का उज्जवल मिसाल बना मेरा लेख!—291, मेरे फेवरिट फुटबॉलर : सुब्रतो भट्टाचार्य!—291, अखिलेशवादियों को अभी से योगी की विदाई के जश्न में डूब जाना चाहिए!—293, यूपी चुनाव में उठने जा रहा है : समानुपातिक भागीदारी का मुद्दा!—294, बहुजनों का विभीषण : योगेन्द्र यादव!—294, कमाल खान दुनिया को बेहतर बनाने के लिए क्या देकर गए!—295, अल्लू अर्जुन : वर्तमान दौर के सबसे गिफ्टेड एक्शन हीरो!—295, भारत की ग्रेटा

गार्बो : महानायिका सुचित्रा सेन पर Palash Biswas का अद्भुत लेख!—296, 2022 के विधानसभा चुनावों को एक मुक्ति—युद्ध के रूप में लें—296, 17 जनवरी को विश्व आर्थिक मंच के दावोस—297, समानुपातिक भागीदारी से भारत बन सकता है : दक्षिण अफ्रिका!—298, भाजपा और विकास का मुद्दा!-2—300, पद्मश्री विजेताओं की लिस्ट में नहीं हैं : दुसाध का नाम!—301, अपने इष्ट से प्रार्थना करें : देश हिंदूओं के बजाय गैर-हिंदू व्यवसायियों के हाथ में बिके!—301, दुनिया की सबसे अर्थ लोलुप कौम : भारत के आर्य अर्थात सवर्ण!—303, सवर्ण इसलिए ब्राह्मणों का अनुसरण और बहुजन यादवों से ईर्ष्या करते हैं!—305, ब्राह्मण हित से प्रेरित है साधु संतों की गतिविधियां!—306, कुलकर्णी साहब ने अपनी उपस्थिति से धन्य किया डाइवर्सिटी हाउस को!—307, लैंगिक असमानता से बेखबर : भारत के राजनीतिक दल!—311, रवीश! तुमसे माइक कोई नहीं छीनेगा!—314, बसपा के पुनर्जीवन में कितना कारगर हो सकता है रावण!—316, क्या विधानसभा चुनाव 2022 सामाजिक न्याय की राजनीति के अंत का संकेतक है?—317, जेनुइन ही मैन : मेरे मामा पड़ोही दुसाध!—319, मैं इसलिए आत्मकथा लिखने की लक्जरी एंजॉय नहीं कर सकता!—320, हिंदुओं दुसाधो से सावधान!—321, भारत में मन व प्राण से राजनीति करने वाली पार्टी है : सिर्फ भाजपा!—322, क्या किसी हिंदू के लिऐ भी प्राणोत्सर्ग किया जा सकता है?—323, जरुरी हो गया है इनका विकल्प ढूंढना!—325, लैंगिक असमानता तथा आर्थिक और सामाजिक विषमता से पार पाने का अभिनव विचार!—325, भावनात्मक भाषण देकर लोगों को रुलाने में पारंगत हैंः डॉ. इंदु चौधरी—327, आस्था का अर्थशास्त्र!—327, मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या का सर्वाधिक शिकार : भारत की आधी आबादी!—328, लैंगिक समानता के मोर्चे पर : अपने पडोसी मुल्कों से पीछे भारत—329, सेना सहित सर्विस सेक्टर के सारे बदलाव : वर्ग संघर्ष से प्रेरित!—330, अवसरों और संसाधनों पर पहला हक़ : मूलनिवासी वंचित वर्गों का!—331, कुदरत ने मुकर्रर कर दी है : भारत पाक को सजा!—341, राजनीतिक पार्टी बनाने के लिए क्यों बाध्य हुआ : बहुजन डाइवर्सिटी मिशन!—341, मूलनिवासी दलित, आदिवासी और पिछड़ों से युक्त बहुजनों सत्ता का कमाल समझो!—352, क्रांति इसलिए नहीं हुई क्योंकि भारत के मार्क्सवादी हिंदू धर्म की विराट व्याधि के शिकार रहे—353, एक बुद्धिस्ट बिदुषी द्वारा बुद्ध को मार्क्स से श्रेष्ठतर बताए जाने पर मेरा कमेंट!—354, पहली बार यात्रा स्थगित कर : करनी पड़ी घर वापसी!—354, धनबाद की यादें!—357, तय हो गया डाइवर्सिटी पार्टी का नाम!—357, बहुजन लेखकों के उपेक्षा का शिकार हुई : बहुजन डाइवर्सिटी पार्टी!—358, बहुजन डाइवर्सिटी पार्टी : लड़ेगी आधी आबादी के आर्थिक मुक्ति की लड़ाई!—359, डिवाइन स्लेव्स हैंः भारतीय जनगण!—360, बहुजनों को डिवाइन स्लेवरी से मुक्त कर सकती है : बहुजन डाइवर्सिटी पार्टी!—360, हिन्दी पट्टी के गांव मानवीय कमजोरियों व असभ्यता के शिखर हैं—360, अभी मिशन डाइवर्सिटी कमः मिशन हेल्थ में ज्यादा बिजी हूं!—361, सामाजिक न्याय का सर्वोत्तम एजेंडा!—361, शासक वर्ग ने गुलामी

के प्रतीकों की मुक्ति जैसे अमोघ अस्त्र के सहारे छेड़ दिया है : इकतरफा वर्ग संघर्ष!—363, गुलामी के प्रतीकों पर बुद्धिजीवी वर्ग का असमंजस!—364, काश! शुद्रातिशुद्र हिंदू राष्ट्र का अर्थशास्त्र समझ पाते!—364, भारत के हर क्षेत्र में पिछड़ने के लिए जिम्मेवारः सिर्फ और सिर्फ हिंदू धर्म!—365, पैगम्बर और उनके निर्देश को प्रश्नातीत मानने की कमजोरी बनेगी : इस्लाम के अनुसरणकारियों की बर्बादी का सबब!—368, कोई भी किताब आसमानी नहीं हो सकती!—368, मुस्लिम समुदाय के नेतृत्वकर्ताओं को हिंदू धर्म के ठेकेदारों से कुछ सीख लेनी चाहिए!—369, हुसैनाबाद अनुमंडक के जपला में फिर पड़े मेरे कदम!—372, धर्म का अर्थशास्त्र समझने में व्यर्थ : भारतीय बुद्धिजीवी!—373, शाबाश निर्देश! आप बहुत सही मैसेज देने की शुरुआत की हो।—374, बतौर निर्माता निर्देशक दुनियां के सबसे घटिया एक्टर अमिताभ ही हैं!—375, राजनीतिक असमानता खत्म होने में 95 साल लगेंगे—377, राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी—377, भारत में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसर बेहद सीमित—377, क्या नवनिर्वाचित राष्ट्रपति खुद को अपवाद साबित करेंगी!—379, विद्यार्थी के रूप मेंः मैं रहा थर्ड डिविजनर!—381, भारतीय लोकतंत्र, आंबेडकर और मोदी!—382, भारतीय लोकतंत्र, आंबेडकर और मोदी—389, दुसाध की कसौटी पर प्रेमचंद की सबसे क्रांतिकारी रचना!—389, पिछले दस दिनों में जो किताब तैयार किया हूं, उसका कवर!—392, क्या ओबीसी मेंटली पूरी तरह नॉर्मल कौम नहीं है?—393, भारत को संभावित विश्वगुरु कहना बेशर्मी की इंतहा है!—394, अंतरराष्ट्रीय मूलनिवासी दिवस पर दुसाध का संदेश!—394, नीतीश ध्यान दें : नो रिस्क, ने गेन!—395, स्वाधीनता संग्राम के महानायक पंडित जवाहर लाल नेहरू!—396, अमृत कुंभेर संधान के लेखक समरेश बसु की भूमिका में युवा दुसाध!—398, प्योर हिस्ट्री चेंजर है : यूनिवर्सल रिजर्वेशन फ्रंट का कांसेप्ट!—398, बहुत दिनों बाद देखने को मिला सवर्णपालिका का विवेक सम्मत निर्णय!—399, आज मुझे लिखते हुए 25 साल पूरे हुए!—402, 17 सितम्बर 2022 : मेरे जीवन का बहुत खास दिन रहा—404, मोदी सवर्णों का भयावह भविष्य देखते हुए खुद को सुधारें!—404, अशेष आभार!—405, हम एक हैं!—406, हिंदू मेरिट की खास मिसाल : राजू श्रीवास्तव!—406, बहुजनों के असल अपराधी!—407, लडाई हिंदू धर्म संस्कृति के खात्मे की होनी चाहिए!—407, मानव जाति के कॉन्फ्लिक्ट/ संघर्ष के मूल कारण!—410, राज कपूर के निर्देशकीय कौशल पर सवाल!—411, मार्क्सवादी कहें या सवर्णवादी Jp Narela नामक व्यक्ति के निहायत ही बचकाना पोस्ट पर मेरी राय!—413, नागलोक का भ्रमण!—414, नागपुर के मेरे अभिभावक : महान अम्बेडकरवादी प्रदीप गायकवाड!—415, विकास गौड़ : जिनकी आंखों में तैर रहा है बहुजन ट्रेड यूनियन को मॉडल रूप देने का सपना!—416, एक महीने में आ रहा है इस किताब का दूसरा संस्करण!—417, 70वें जन्मदिन पर इस देश के अन्यायकरी वर्गः सवर्णों को दुसाध का संदेश!—418, मेरे जन्मदिन पर बधाई देने वाले आत्मीय स्वजनों और मित्रों को अशेष धन्यवाद!—420, उत्तर आधुनिक

भारतीय नॉन-फिक्शन साहित्य रचना में डाइवर्सिटी मैन एच. एल. दुसाध का कोई मुक़ाबला नहीं!—420, महान बहुजन चित्रकार डॉ. लाल रत्नाकर सर की ओर से भेजा गया संदेश!—421, आज से मैं तो मियांदाद के दिए पुराने जख्म से पूरी तरह उबर गया!—421, विराट कोहली के आज के खेल पर Karmendu Shishir सर के एक कमेंट पर मेरी राय!—422, यादों के गलियारे से दलित मुक्ति का सर्वोत्तम दस्तावेजः भोपाल घोषणापत्र!—423, असली अहीर लगता है सूर्य कुमार यादव!—425, प्रो. रतन लाल : भारतीय बौद्धिक दुनिया का अमिताभ बच्चन!—427, आज फिर याद किए जायेंगे 1992 के हीरो : इंज्ममामुल हक!—429, क्रिकेट के सुपरस्टीशन का शिकार हुआ : मैं दुसाध!—430, Pro Bilakshan Ravidas सर! बहुजन समाज दुसाध का आंकलन कर चुका है : पीछे रह गए हैं आप!—431, आखिर क्यों ईडब्ल्यूएस आरक्षण का लाभ उठाने वालों को दण्डित किया जाना चाहिए!—433, सेलेक्टर्स की साजिश का शिकार बन रहा किंग कोहली!—435, Amazon पर आ गई मेरी हिस्ट्री चेंजर किताब!—436, महिलाओं में उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए : देना होगा सप्लाई में हिस्सेदारी!—437, विप्र रवीश के प्रति दीवानगी का इजहार करने में संयम बरतो!—440, जेएनयू की दीवारों पर वॉल राइटिंग हुई है, 'ब्राह्मणों भारत छोड़ो!'—441, जमीन के बंटवारे पर एक मार्क्सवादी विद्वान द्वारा अत्यधिक तरजीह दिए जाने पर मेरा निम्न कमेंट!—441, सुनिए सुपर टीवी पत्रकार रवीश कुमार की पत्रकारिता पर : दुसाध द ग्रेट की राय!—441, रवीश कुमार ने रोहित वेमुला की बात को दबाया और कन्हैया कुमार को हीरो बनाया—442, अनुकरणीय है : सवर्णों की वर्गीय चेतना!—443, आजादी के अमृत महोत्सव पर बहुजन डाइवर्सिटी की अभिनव परिकल्पना!—443, Dhamma Mitra का एक आसाधारण पोस्ट!—444, संघी मोदी और मार्क्सवादियों का क्लास इंट्रेस्ट एक है!—447, कोडरमा से दुसाध का संदेश—448, हिंदू भले ही मेसी पर फख्र करें : बहुजनों की संवेदना एमबापे के साथ है!—451, रफी साहब के जन्म दिन पर यादों के दो शब्द!—452, वर्ग संघर्ष में बाधकः हिंदू मार्क्सवादी!—452, किसी ऐसे लेखक का नाम बताएं जो पॉलिटिकल राइटिंग में दुसाध के आसपास हो!—453, मिल गई मंजिल मुझे!—456

लेखकीय

मिशन डाइवर्सिटी : शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता लागू करवाने के मकसद से 'बहुजन डाइवर्सिटी मिशन'(बीडीएम) की ओर से प्रकाशित की जा रही पुस्तकों की एक नयी श्रृंखला है, जिसकी शुरुआत 2021 से हुई। इसी मकसद से बीडीएम की ओर से 2008 से 'आज के भारत की ज्वलंत समस्याएं' श्रृंखला की शुरुआत हुई, जिसके अंतर्गत अबतक 22 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। लेकिन बहुजन डाइवर्सिटी मिशन की ओर से जो सबसे चुनौतीपूर्ण श्रृंखला शुरू हुई, वह 'डाइवर्सिटी इयर बुक' की रही, जिसकी शुरुआत 2006 हुई। इसमें भारत में चल रहे 'आर्थिक और राजनीतिक संघर्ष' का सालाना इतिहास दर्ज होता रहा है। भारत के आर्थिक और राजनीतिक संघर्ष का वार्षिक इतिहास रिकॉर्ड करते हुए 2021 तक मेरे संपादन में इयर बुक की औसतन 1000 पृष्ठों की 15 वार्षिकियां प्रकाशित हुई। किन्तु हजार से डेढ़ हजार पृष्ठों की डाइवर्सिटी इयर बुक निकालना बहुत ही चुनौतीपूर्ण काम रहा। इसमें बेहिसाब समय देने के साथ ही संगठन को भारी आर्थिक बोझ भी वहन करना पड़ता रहा। ऐसे में जब इयर बुक निकालने की चुनौती झेलना कठिन लगने लगा, तब डाइवर्सिटी मूव्हमेंट को आगे बढ़ाने के लिए 'मिशन डाइवर्सिटी' निकालने का निकालने का निर्णय लिया गया। मिशन डाइवर्सिटीः 2022 इस सीरिज की तीसरी किताब है, जिसमें बहुजन नजरिये से 2022 की महत्वपूर्ण आर्थिक-राजनीतिक घटनाओं के साथ फिल्म, मीडिया,स्पोर्ट्स, धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर अख़बारों से लेकर फेसबुक पर की गयी मेरी छोटी-बड़ी सभी टिप्पणियां संग्रहित हैं।

अपने दो पारंपरिक अमोघ हथियारों के सहारे चुनावी मैदान में उतरी : भाजपा

2022 में अखबारों और पोर्टलों पर मेरे 64 लेख,जबकि दो शताधिक टिप्पणियां फेसबुक पर प्रकाशित हुई। बहरहाल 2022 में विविध घटनाओं के मध्य मेरी नज़रों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण, 5 राज्यों, खासकर उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव रहा। इसलिए गत वर्ष प्रकाशित 64 में से 25 टिप्पणियां यूपी विधानसभा चुनाव 2022 पर केन्द्रित रहीं। बहरहाल जो यूपी विधानसभा चुनाव 2022 का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना साबित

हुआ, उसके विषय में 14 दिसंबर, 2021 को फेसबुक पर निम्न पोस्ट के जरिये मैंने यूपी के बहुजनवादी दलों को आगाह करने का प्रयास किया था। *इस देश के परजीवी और जन्मजात सुविधाभोगी वर्ग के आशा और आकांक्षा की प्रतीक बन चुकी भाजपा अपने दो पारंपरिक अमोघ हथियारोंः मुस्लिम विद्वेष का प्रसार और हिंदू धर्म-संस्कृति के गौरवगान-के सहारे देश के राजनीति की दिशा तय करने वाले यूपी विजय के लिए मैदान में कूद चुकी है। यही वो हथियार हैं जिसके सहारे भारत विजय कर मोदी ने वर्ग संघर्ष का खुला खेलते हुए शक्ति के समस्त स्रोत अपने चहेते परजीवी वर्ग के हाथ में सौपने में सारी शक्ति लगा कर बहुजनों को उस स्टेज में पहुंचा दिया है, जिस स्टेज में पहुंच कर सारी दुनिया में गुलामों को अपने मुक्ति की निर्णायक लडाई लड़नी पड़ी। यूपी विजय के प्लान के तहत ही अगस्त 2020 में सरकारी धन से राम मंदिर निर्माण का भूमि पूजन कराकर मोदी को नई सदी में हिंदू धर्म-संस्कृति के सबसे बड़े उद्धारक की छवि प्रदान करने के मुहिम की शुरुआत हुई। 13 दिसंबर, 2021 को नवनिर्मित काशी विश्वनाथ मंदिर का साडंबर लोकार्पण कराकर उस मुहिम को तुंग पर पहुंचाने का बलिष्ठ प्रयास हुआ है। इसीलिए 13 दिसंबर के बाद तमाम साधु संत, प्रायः समस्त हिंदू लेखक-पत्रकार और राष्ट्रवादी नेता मोदी को आधुनिक शंकराचार्य की छवि प्रदान करने के साथ मुस्लिम विद्वेष के प्रसार और हिंदू धर्म संस्कृति के जयगान में एक दूसरे से होड़ लगाने में जुट गए हैं।*

उग्र सामाजिक न्याय के बजाय महंगाई, बेरोजगारी, सांप्रदायिकता इत्यादि जैसे घिसे-पिटे हथियारों पर निर्भर : बहुजनवादी दल

भाजपा के मुकाबले यूपी के चुनावी जंग में उतरे बहुजनों के नेता उस के अमोघ हथियार को लेकर लगता है जरा भी चिंतित नहीं हैं। इसलिए जिस हथियार के सहारे भाजपा यूपी विजय का विसात बिछा रही है, उसकी काट के लिए सही वैकल्पिक हथियार इस्तेमाल करने के बजाय महंगाई, बेरोजगारी, सांप्रदायिकता इत्यादि जैसे घिसे-पिटे हथियार इस्तेमाल करते नजर आ रहे हैं, जो अतीत की भाँति एक बार फिर इनकी गहरी शिकस्त का सबब बन सकता है।

अगर बहुजनवादियों को यह लड़ाई जीतनी है तो चुनाव को उग्र सामाजिक न्याय पर केंद्रित करना होगा : बहुजनों के लिए नौकरियों से आगे बढ़कर उद्योग-व्यापार इत्यादि ए टू जेड में सर्वव्यापी आरक्षण दिलाने की विसात बिछानी होगी। इसके लिए सबसे आसान रास्ता है डाइवर्सिटी को चुनावी मुद्दा बनाना। एक मात्र डाइवर्सिटी में ही हिंदू धर्म के गुलाम मोदी भक्त बहुजनों को मुस्लिम विद्वेष और हिंदू धर्म संस्कृति के सम्मोहन से मुक्त करने का सामर्थ्य है। अगर बहुजनवादी दल यूपी चुनाव में डाइवर्सिटी को वरण करने में कोताही बरतते हैं तो भाजपा को शिकस्त देने के लिए उन्हें किसी चमत्कार पर ही निर्भर रहना होगा!

स्वामी प्रसाद मौर्य ने बदला चुनावी फिजा

बहरहाल 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा से पार पाने के लिए दिसंबर 2021 में चुनाव को उग्र सामाजिक न्याय तथा नौकरियों से आगे बढ़कर उद्योग-व्यापार इत्यादि सर्वव्यापी आरक्षण केन्द्रित करने का जो आह्वान किया, उसे जनवरी 2022 से अख़बारों और पोर्टलों इत्यादि में और जोर-शोर से उठाने लगा। इस क्रम में 1 जनवरी, 2022 को प्रकाशित आलेख *विधानसभा चुनाव 2022 : कैसे हो हेट पॉलिटिक्स की काट* बेहद खास रहा। इसी टोन में 7 मार्च को चुनाव संपन्न होने पहले : 6 मार्च तक थोड़े-थोड़े अन्तराल पर लिखता और चैनलों पर बोलता रहा। खैर! हेट पॉलिटिक्स के जरिये देश के राजनीति की दिशा तय करने वाली यूपी में बहुत पहले से बढ़त बना चुकी भाजपा को पहली बार सबल चुनौती स्वामी प्रसाद मौर्य से मिली। 11 जनवरी को भाजपा छोड़ सपा में शामिल होते ही जिस तरह स्वामी प्रसाद मौर्य ने चुनाव को 85 बनाम 15 पर केन्द्रित किया, उससे योगी आदित्यनाथ के 80 बनाम 20 के फार्मूले से बढ़त बनाई भाजपा बराबरी पर आ गयी। तमाम राजनीतिक विश्लेषकों ने कहना शुरू किया कि यूपी में चुनाव अब 50:50 हो गया है। भाजपा छोड़कर सपा में शामिल हुए स्वामी प्रसाद मौर्य ने जिस तीखे अंदाज़ में सामाजिक न्याय की बात उठाना शुरू किया, उससे चुनाव सीधा भाजपा बनाम सपा हो गया और मुकाबले में बसपा और कांग्रेस काफी पीछे चली गईं। मौर्य के सपा ज्वाइन करने के बाद चुनावी फिजा में जो अचानक बदलाव आया, उसका अनुमान लगाते हुए अखिलेश यादव ने भी सोत्साह उनका स्वागत किया। उन्होंने ट्विट कर कहा, *सामाजिक न्याय और समता-समानता की लड़ाई लड़ने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य जी एवं उनके साथ आने वाले अन्य सभी नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों का सपा में ससम्मान स्वागत एवं अभिनन्दन। सामाजिक न्याय का इन्कलाब होगा-बाईस में बदलाव होगा। एक और ट्विट कर आगे की रणनीति का खुलासा किया, इस बार सभी शोषितों, वंचितों, उत्पीड़ितों, उपेक्षितों का 'मेल होगा' और भाजपा की बांटने व अपमान करने वाली राजनीति का इन्कलाब होगा। बाईस में सबके मेल-मिलाप से सकारात्मक राजनीति का मेला होबेः भाजपा की ऐतिहासिक हार होगी।* कुल मिलाकर स्वामी प्रसाद मौर्य का सपा में स्वागत करने के साथ जिस तरह अखिलेश यादव ने सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता दिखाया, उससे लगा चुनाव 85 बनाम 15 पर केन्द्रित होने जा रहा है, जिसमें सपा की सम्भावना बेहतर होगी। किन्तु स्वामी प्रसाद के सपा से जुड़ने के कुछ दिन बाद ही अखिलेश यादव सामाजिक न्याय के मुद्दे से पीछा छुड़ाकर पुराने ढर्रे पर लौट आये। हद तो तब हो गयी जब जनवरी बीतते-बीतते वह सत्ता में आने पर मंदिरों में नियुक्त ब्राह्मण पुजारियों को मानदेय देने तथा ब्राह्मणों पर दायर मुकदमें वापस लेने की घोषणा करने लगे।

अखिलेश यादव ने मानो भाजपा को जिताने की सुपारी ले रखी है

पुराने ढर्रे पर लौटते हुए अखिलेश यादव ने भाजपा को शिकस्त देने वाले अमोघ अस्त्र : सामाजिक न्याय से जो दूरी बनाना शुरू किया, उसका सही प्रतिबिम्बन 8 फ़रवरी को जारी सपा के घोषणापत्र में हुआ, जिसमें सामाजिक न्याय से जुड़ा एक भी पैरा न देखकर लोग अनुमान लगा लिए कि 2014, 2017 और 2019 की भांति अखिलेश एक बार फिर सामाजिक न्याय से दूरी बनाने जा रहे हैं। इस पर *सामाजिक अन्यायमुक्त भारत निर्माण का सपना देने में व्यर्थ : अखिलेश यादव* शीर्षक से मेरा लेख 10 फ़रवरी के अख़बारों में प्रकाशित हुआ, जिसके उपसंहार में मैंने लिखा *उन्होंने एक ऐसा घोषणापत्र जारी किया है, जिसे देखकर लगता है मानो उन्होंने भाजपा को जीताने की सुपारी ले रखी है!* बहरहाल 2024 के लोकसभा चुनाव पूर्व 10 फ़रवरी से 7 मार्च, 2022 तक चले सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनाव : यूपी विधानसभा चुनाव में बहुजनवादी दलों ने जिस तरह लड़ाई लड़ी, उसके आधार पर मैंने 6 मार्च को *खांटी भाजपा विरोधी के रूप में उत्तीर्ण होने में व्यर्थ : यूपी के गैर-भाजपाई दल* शीर्षक से प्रकाशित अपने लेख में खुली घोषणा कर दिया था कि *जिन मुद्दों के साथ ये पार्टियाँ भाजपा जैसी विश्व की सबसे शक्तिशाली पार्टी के खिलाफ उतरी हैं, ऐसा लगता है इन पार्टियों ने महज चुनाव में उतरने की औपचारिकता पूरा किया है। इन्होंने भाजपा की सवर्णपरस्त नीतियों के शिकार लोगों के समक्ष ऐसा कोई सपना नहीं दिया, जिसकी जोर से वे भाजपा से पार पा सकें! और जब 10 मार्च को चुनाव परिणाम आया, देखा गया कि वे भाजपा से पार पाने में बुरी तरह विफल रही हैं।*

जरूरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढ़ना

यूपी विधानसभा चुनाव परिणाम यूँ तो सभी गैर-भाजपाई दलों के लिए बड़ा आघात रहा, किन्तु इससे जिस पार्टी के वजूद पर संकट खड़ा हुआ, वह और कोई नहीं बसपा रही, जिसे सिर्फ एक सीट से संतोष करना पड़ा!' वास्तव में 2022 में बसपा को जैसी हार का सामना करना पड़ा है, शायद वह स्वाधीन भारत के इतिहास की अनोखी घटना है। क्योंकि जिस पार्टी से लोग भारत पर शासन करने की उम्मीद पाले हुए थे; जो पार्टी देश के राजनीति की दिशा तय करने वाले उत्तर प्रदेश में चार बार सत्ता संभाली हो, उसकी शर्मनाक पराजय के बाद तमाम राजनीतिक विश्लेषक कहने लगे कि यदि मायावती ने अपनी रणनीति व कार्यशैली में व्यापक बदलाव नहीं लाया तो यह अतीत का विषय बनकर रह जाएगी। बहरहाल बहुजन नजरिये से यूपी विधानसभा चुनाव का जो बेहद हताशाजनक परिणाम आया उस पर *जरुरी है बसपा और सपा का विकल्प ढूँढना* शीर्षक से लेख लिखकर यह सन्देश देने के लिए बाध्य होना पड़ा।

मायावती जी के साथ अखिलेश यादव को भी सामाजिक न्याय के ट्रैक पर लाना असंभव है, इसकी सत्योपलब्धि बहुजन बुद्धिजीवी व एक्टिविस्ट जितनी जल्दी कर लें, देश और वंचित बहुजन समाज के हित में उतना ही बेहतर होगा। इनकी कमियों के कारण आज भाजपा 2025 में हिन्दू राष्ट्र की घोषणा करने की स्थिति में आ गयी है। अब समय आ गया है कि यूपी के बहुजन मायावती और अखिलेश का विकल्प ढूंढने में लग जाएं! हालांकि विकल्प खड़ा करना बहुत, बहुत और बहुत ही कठिन है, पर, नामुमकिन तो नहीं है! विकल्प खड़ा करने का एक यह सुफल हो सकता कि अपना सही विकल्प उभरते देख खुद का वजूद बचाने के लिए ये सामाजिक न्याय के ट्रैक पर वापस आ जाएं। अभी कोई विकल्प नहीं होने के वजह से सवर्णों को खुश करने के लिए सपा-बसपा सामाजिक न्याय से दूरी बनाएं हुए हैं। लेकिन सॉलिड विकल्प मिलने पर ये बहुजन हित को तरजीह देने के लिए बाध्य होंगी। ऐसे में इनका विकल्प ढूंढना, खुद इनके हित में भी बेहतर होगा! अब जहाँ तक विकल्प का सवाल है, आज भी कई बहुजनवादी पार्टियाँ खुद को इनका विकल्प बनाने में लगी हुई हैं। किन्तु विकल्प के रूप में उभरने का प्रयास कर रही पार्टियों में शायद ऐसा कुछ नहीं जो इन्हें बदलने के लिए मजबूर कर दे। इसलिए ऐसी किसी पार्टी को सामने आना होगा जिसका एजेंडा उग्र सामाजिक न्याय हो, जो इन्हें बदलने के लिए मजबूर कर दे। सपा-बसपा के पास आज भी विशाल मतदाता वर्ग है, जो भाजपा को उखाड़ने में प्रभावी रोल अदा कर सकता है। लेकिन मतदाता वर्ग तभी प्रभावी भूमिका अदा करने का मन बनाएगा जब ये शक्ति के समस्त स्रोतों में भागीदारी दिलाने का सपना दे। लेकिन सामाजिक न्याय से दूरी बना चुकी सपा-बसपा तभी ऐसे एजेंडे पर वापसी का मन बनायेंगी, जब कोई पार्टी शक्ति के स्रोतों में हिस्सेदारी दिलाने का सॉलिड नक्शा पेश कर इनके वोटरों को अपनी ओर खींचने लगे। ऐसे में सपा-बसपा के सच्चे हितैषियों के लिए जरुरी है कि एक ठोस विकल्प वाली पार्टी खड़ा करने में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करें।

क्यों विनिवेश में प्राथमिकता मिले गैर-हिन्दू उद्यमियों को

बहरहाल यूपी विधानसभा चुनाव पर मैंने जो भूरि-भूरि लेख लिखे, उनमें निःसंदेह *2022 : सामाजिक न्याय की राजनीति का टेस्ट होना बाकी है!* सबसे महत्वपूर्ण रहा, जिसे एकाधिक बार पढ़ा जाना चाहिए। यूपी चुनाव के दौरान मैंने जो दो दर्जन लेख लिखे, उनमे 3 फ़रवरी को *विनिवेश में प्राथमिकता मिले गैर-हिन्दू उद्यमियों को* शीर्षक से प्रकाशित लेख से भारी संतुष्टि मिली। *नई सदी में विनिवेश मंत्रालय गठित कर लाभजनक सरकारी कंपनियां व परिसंपत्तियां बिकने का जो सिलसिला स्वयंसेवी अटल बिहारी वाजपेयी से शुरू हुआ, वह मोदी राज में इस हद तक तुंग पर पहुँच गया है कि लगता है सरकार के पास कुछ रहेगा ही नहीं : सब कुछ निजी हाथों*

में चला जायेगा। बहरहाल मोदी राज में विनिवेशीकरण के जरिये देश का सबकुछ निजी क्षेत्र में जाने का जो अंधाधुन सिलसिला शुरू हुआ, उसमे 27 जनवरी, 2022 एक ऐसा दिन रहा जब देश ने कुछ राहत की सांस ली। उस दिन करीब 69 साल बाद आधिकारिक तौर पर टाटा समूह के हाथों में उस एयर इंडिया की कमान आई, जिसकी शुरुआत उस ने 1932 में की और जिसका 1953 में प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने राष्ट्रीयकरण कर लिया था। विनिवेश की हिस्ट्री में एयर इंडिया का टाटा के हाथों में जाना एक नयी और सुखद घटना थी। देश बिकने के दौर में एयर इंडिया का का टाटा के हाथों में जाना एक सुखद हवा का झोंका था, शायद इसीलिए ही वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने इस के निजीकरण को सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। इसके पहले देश बेचवा सरकार की ओर से कभी इस तरह की प्रसन्नता जाहिर नहीं की गयी : इसके पहले सरकार में कहीं अपराधबोध की भावना परिलक्षित होती रही।

बहरहाल एयर इण्डिया के टाटा के हाथों में जाने पर जिस तरह खुद एयर इंडिया के कर्मचारियों से लेकर विक्रेता भारत सरकार और बुद्धिजीवी वर्ग ने राहत की सांस लिया है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि इससे विनिवेश के इतिहास में एक नया सुखद अध्याय जुड़ा है। और यदि यह सुखद अध्याय है तब क्यों न निजीकरण का विरोधी बुद्धिजीवी वर्ग सरकारी कंपनियों-परिसंपत्तियों को हिन्दू व्यापारियों के हाथों में जाने से रोके! भारी अफ़सोस की बात है कि विनिवेश के जरिये सारी सरकारी कंपनियां, रेल, बस और हवाई अड्डे, चिकित्सालय और विद्यालय इत्यादि प्रायः सारा कुछ उन्हीं हिन्दू-जैनी उद्यमियों के हाथ में जा रहा है, जिनका परोपकार के मामले में रिकॉर्ड अत्यंत शोचनीय है एवं जो व्यवसाय के सामाजिक, मानवीय, राष्ट्रीय और वैश्विक उद्देश्यों की अनदेखी कर प्रायः पूरी तरह आर्थिक उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहते हैं। अब जबकि एयर इंडिया के टाटा के हाथों में जाने से सर्वत्र राहत का भाव परिलक्षित हो रहा है, क्यों न देश विनिवेश में गैर-हिन्दू उद्यमियों को प्राथमिकता देने का मन बनाये! ऐसा करना क्यों जरुरी है, इसे जानने के लिए विनिवेश में प्राथमिकता मिले गैर-हिन्दू उद्यमियों को शीर्षक से प्रकाशित लेख को एकाधिक बार पढना आवश्यक है।

ऑस्कर में इतिहास में इतिहास रचने में व्यर्थ हुई : जय भीम

पिछले कुछ सालों से दक्षिण भारत की जिन दलित विषयक फिल्मों ने अलग से फिल्म प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया, उनमें 'जय भीम' ने एक अलग जगह बना लिया था। 2021 में रिलीज हुई यह फिल्म भारत में सफलता के झंडे गाड़ते हुए सात समंदर पार तक लोगों को उद्वेलित करने सफल रही और लोग ऑस्कर में इससे चमत्कार घटित करने की उम्मीद पाल लिए थे। इस उम्मीद को करारा झटका 8 फ़रवरी को लगा, जिस दिन ऑस्कर के लिए विभिन्न श्रेणियों में नमिल होने वाली 5 बेस्ट फिल्मों

की घोषणा हुई। उस दिन जो लिस्ट जारी हुई उसमें जय भीम का नाम नहीं था, जबकि लोग आमिर खान की 'लगान' के बाद तमिल सुपर स्टार सूर्या और ज्योतिका द्वारा निर्मित और टीजे ज्ञानवेली द्वारा निर्देशित इस फिल्म से किसी बड़े चमत्कार की उम्मीद लगा बैठे थे। वैसे इस फिल्म से चमत्कृत के होने बावजूद मैं कुछ दिन पूर्व ही घोषणा कर चुका था कि *मुश्किल होगा जय भीम के लिए ऑस्कर में इतिहास रचना* (देखें 29 और 30 जनवरी को जय भीम पर प्रकाशित मेरे लेख)। किन्तु ऑस्कर में इतिहास रचने से महरूम होने के बावजूद *2021 में तमिल फिल्म 'कुडागल' के बाद 2022 में 'जय भीम' और 'मरक्कर' ने ऑस्कर के क्वार्टर फाइनल तक का सफ़र तय कर संकेत दे दिया है कि भारत निकट भविष्य में बेस्ट फॉरेन फिल्मों की श्रेणी में विजेता बनेगा और यह मुमकिन होगा मदर इंडिया, लगान देने वाले बॉलीवुड के बजाय कूड़ांगल, मरक्कर, और जय भीम इत्यादि देने वाले दक्षिण भारतीय फिल्मोद्योग से। और ऐसा इसलिए होगा क्योंकि फिल्मों की जो विविधता नीति हॉलीवुड सहित ब्रिटेन व अन्य पश्चिमी देशों के फिल्मों की गुणवत्ता की जान है, वह विविधता नीति अपनाने में दक्षिण भारतीय फ़िल्में आगे बढ़ रही हैं। दक्षिण भारत फिल्मोद्योग की दो फिल्मों का ऑस्कर में यहाँ तक का सफ़र तय करना, इस बात का संकेतक है कि विविधता को अंगीकार करने के कारण ही बाहुबली और पुष्पा जैसी ब्लॉकबस्टर तथा कूड़ांगल, जय भीम और मरक्कर इत्यादि जैसी ऑस्कर लेवल की फ़िल्में देने वाला दक्षिण भारत अब बॉलीवुड को काफी हद तक म्लान कर हॉलीवुड के करीब पहुचने वाला है।*

राजनीतिक पार्टी गठित करने की दिशा में क्यों अगसर हुआ था : बहुजन डाइवर्सिटी मिशन

2022 में आंबेडकर जयंती के दिन हमने बहुत ही भारी मन से सूचित किया कि डाइवर्सिटी केन्द्रित एक राजनीतिक पार्टी गठित करने जा रहे हैं, जो आगामी 27 अगस्त को 'डाइवर्सिटी डे' के अवसर पर औपचारिक रूप से लॉन्च हो सकती है। और यह अप्रिय निर्णय लेना पड़ा था बहुजनवादी दलों से भारी मोहभंग के कारण! जिन कारणों से बहुजनवादी दलों से मोहभंग होना शुरू हुआ, वे कारण रहे : पहला, जिस आर्थिक और सामाजिक विषमता के खात्मे का बाबा साहेब ने 25 नवम्बर, 1949 को संसद के केन्द्रीय कक्ष से खात्मे का आह्वान किया, उसके खात्मे का डाइवर्सिटी साहित्य के जरिये अनवरत आह्वान किये जाने के बावजूद बहुजनवादी दलों द्वारा उसकी बुरी तरह अनदेखी। दूसरा, डाइवर्सिटी साहित्य द्वारा पिछले तीन-चार सालों से बहुजनवादी दलों को बार-बार अहसास कराया जाता रहा है कि मोदी सरकार ने अपनी सवर्णपरस्त नीतियों से बहुजनों को उस स्टेज में पहुंचा दिया है, जिस स्टेज में पहुँचने पर सारी दुनिया के वंचितों ने ही शासकों के खिलाफ मुक्ति संग्राम संगठित

किया : खुद भारत के लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ यह दृष्टांत स्थापित किया। किन्तु, इसके बावजूद बहुजनवादी दलों ने दलित, आदिवासी, पिछड़ों और इनसे धर्मान्तरित अल्पसंख्यकों को लिबरेट करने में कोई रूचि नहीं लिया। तीसरा, हम कई सालों से लगातार बताते रहे हैं कि मोदी सरकार ने हिन्दू धर्म संस्कृति के जयगान और मुस्लिम विद्वेष के प्रसार के जरिये मिली राजसत्ता के जोर से जिस तरह शक्ति के समस्त स्रोत हिन्दू ईश्वर के उत्तमांग से जन्मे लोगों के हाथ में देने का अन्धाधुन उपक्रम चलाया है, उससे भारत में सापेक्षिक वंचना (Relative deprivation) के वह हालात पैदा हो चुके हैं, जो फ्रांसीसी क्रांति और रूस की वोल्सेविक क्रांति पूर्व भी नहीं रहे .किन्तु बहुजनवादी दलों ने सापेक्षिक वंचना के अनुकूल हालात का सद्व्यवहार करने में कोई रूचि नहीं ली।

पिछले साल आई दो रिपोर्टो : 'विश्व असमानता रिपोर्ट-2022' और 'ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट-2022' ने साबित किया था कि आर्थिक और सामाजिक विषमताजन्य समस्या भारत में जिस भयावह रूप में मौजूद है, वह किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का होश उड़ाने देने के लिए काफी थी। दिसंबर 2021 में लुकास चांसल द्वारा लिखित और चर्चित अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटि, इमैनुअल सेज और गैब्रियल जुकमैन द्वारा समन्वित जो विश्व असमानता रिपोर्ट-2022 दिसंबर, 2021 में प्रकाशित हुई उसने साबित कर दिया कि धन-दौलत के बंटवारे पर अध्ययन करने वाली 'क्रेडिट सुइसे' की अक्तूबर 2015 और जनवरी 2018 में प्रकाशित 'ऑक्सफाम इंडिया' की रिपोर्टो में उभरी भीषण आर्थिक असमानता से वर्तमान मोदी सरकार ने कोई सबक नहीं लिया है। उन रिपोर्टों ने बता दिया था कि विश्व के किसी भी देश के सुविधाभोगी का भारत के जन्मजात सुविधाभोगी वर्ग जैसा शक्ति के स्रोतों पर 80-85 प्रतिशत कब्ज़ा नहीं है। विश्व असमानता रिपोर्ट से भी कहीं भयावह स्थिति वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम द्वारा अप्रैल, 2021 में प्रकाशित ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट-2022 में उभरी। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट ने साबित कर दिया था कि भारत की आधी आबादी को पुरुषों के बराबर आर्थिक समानता पाने के लिए 257 साल भी लग सकते हैं। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट ने साबित कर दिया कि आर्थिक और सामाजिक विषमता की जैसी शिकार भारत की आधी आबादी, विशेषकर जन्मजात वंचित वर्गों की महिलाएं हैं, वैसा विश्व का कोई अन्य तबका नहीं। पिछले वर्ष आई उन दोनों रिपोर्टों पर सवर्णवादी दलों की चुप्पी स्वाभाविक थी, पर बहुजनवादी दल कैसे खामोश रह सकते थे! लेकिन रहे : वे अपनी जुबान पर ताला लगाये रहे। उनकी उस खामोशी ने हमें राजनीतिक दल गठित करने की मानसिक प्रस्तुति लेने के लिए विवश कर दिया!

उपरोक्त कारणों में मुख्य रूप से आधी आबादी के आर्थिक मुक्ति की लड़ाई लड़ने के लिए ही हम राजनीतिक पार्टी खड़ा करने की दिशा में अग्रसर हुए थे। महिलाओं को आर्थिक रूप से पुरुषों के बराबर लाना ही इस पार्टी का प्रधान एजेंडा

स्थिर किया गया था। इसके लिए बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के दस सूत्रीय एजेंडे अर्थात शक्ति के समस्त स्रोतों में क्रमशः दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक और सवर्ण समुदायों की महिलाओं को प्राथमिकता के साथ 50% शेयर सुलभ कराने का प्लान बना था पर, हम 27 अगस्त को इसकी औपचारिक घोषणा करने से पीछे हट गए, जिसका खास कारण बना आजादी का अमृत महोत्सव!

आजादी के अमृत महोत्सव पर : बहुजन डाइवर्सिटी मिशन की अभिनव परिकल्पना!

15 अगस्त, 2022 को भारत की स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे हुए। इसे यादगार बनाने के लिए मोदी सरकार ने आजादी का 'अमृत महोत्सव' मनाने का निर्णय लिया, जो 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा। इस अवसर को खास बनाने के लिए घर-घर तिरंगा फहराया गया। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री ने लाल किले से आने वाले 25 सालों में भारत को विकसित देश बनाने के लिए पंच-प्रण अर्थात पांच संकल्प लिया। 15 अगस्त, 2023 तक चलने वाले आजादी के अमृत महोत्सव का मकसद विगत 75 वर्षों में भारत ने क्या-क्या उपलब्धियां हासिल की है, यह बताना है! सवाल पैदा होता है क्या आजादी का भव्य अमृत महोत्सव बहुजनों के लिए भी रहा, इस सवाल का जवाब जानने की कोशिश मैंने *किनके लिए है आजादी का अमृत महोत्सव!* शीर्षक से छपे लेख में की है, इसका जवाब मिला है—

आज भले ही प्रधानमंत्री मोदी सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यमशीलता तथा मंगल से लेकर चन्द्रमा तक अपनी छाप छोड़ने का उच्च उद्घोष करें : देश के विश्व आर्थिक महाशक्ति बनने का दावा करें पर, हाल के दिनों में प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्टों में जो तथ्य उभरकर सामने आये हैं, उनसे पता चलता है आजादी के 75 वें साल में आज की तारीख में दुनिया के किसी भी देश में भारत के परम्परागत विशेषाधिकारयुक्त व सुविधाभोगी वर्ग का जैसा शक्ति के स्रोतों पर दबदबा नहीं है। इस दबदबे ने दलित, आदिवासी, पिछड़े और इनसे धर्मान्तरित बहुसंख्य लोगों के समक्ष जैसा विकट हालात पैदा कर दिया है, ऐसे से ही हालातों में दुनिया के कई देशों में शासक और गुलाम वर्ग पैदा हुए : ऐसी ही परिस्थितियों में दुनिया के कई देशों में स्वाधीनता संग्राम संगठित हुए। ऐसे ही हालातों में मंडेला के लोगों ने दक्षिण अफ्रीका में गोरों के खिलाफ आज़ादी का बिगुल फूंका; ऐसे ही हालातों में अंग्रेजों के खिलाफ खुद भारतीयों ने स्वाधीनता संग्राम छेड़ा था। अतः आज जब देश आजादी के अमृत महोत्सव में मत्त है, विगत 75 सालों से आज़ादी के सुफल से वंचित बहुजनों के समक्ष अपनी आज़ादी की लड़ाई में उतरने का संकल्प लेने से भिन्न कोई विकल्प ही नहीं बचा है!

15 अगस्त के लेख में जिस आजादी की लड़ाई लड़ने का आह्वान किया, उसकी

Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

Join Our Inclusive Reading Community

- ✓ We champion diverse voices and perspectives
- ✓ Your support helps amplify underrepresented authors
- ✓ We provide free access to educational institutions
- ✓ Building bridges through shared stories
- ✓ Creating space for all narratives to be heard

Support Our Mission

Your donation enables us to:

- Curate diverse book collections
- Support authors from marginalized communities
- Provide free resources to educators
- Maintain our accessible digital library

Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library